भजन

तर्ज :– दिन हैं बहार के तेरे मेरे इकरार के

जिसे इंतजार था, पूरण ब्रह्म के दीदार का
उस दुनियाँ ने अब, दरशन पा लिया
वेद कुरान जिनका, करते हैं गुणगान आके
चरणों में सबने सर को झुका दिया जिसे इंतजार था..

1.) श्री प्राणनाथ जी ने की है मेहरबानी, आये साथ लेके अपनी अखंड वाणी
किया शोर आलम में, ब्रह्मवाणी की गुंजार का,चरणों में

2.) जिनको सभी कहते अगम निगम हैं,वो ही प्राणनाथ, अल्ला, पूरण ब्रह्म है
परदा हटाया हिन्दु–मुस्लिम की दीवार का,चरणों में सबने.

3.) जब कायमी का दिन आयेगा,सामने ये ही मेरा प्राणनाथ होगा
सभी मुक्त होंगे, दरशन करके सुखदातार का, चरणों में सबने.

4.) शब्दातीत को शब्द ना पहुंचे,शबद सभी रह जायेंगे हद में
हद बेहद के पार अक्षर, अक्षर के भी पार का, चरणों में सबने.